पर्यावरण प्रदूषण और मानव सुरक्षा

रवि कुमार गुप्ता
छात्राध्यापक

हम जिस धरती पर रहते है उसे चारो तरफ से एक आवरण ने घेर रखा है, जिसे हम पर्यावरण कहते है। इस पर्यावरण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना एंव इसका संरक्षण करना आज की प्रमुख आवश्यकता है, क्योकि यह प्रदूषित हो रहा है। प्रदूषण की यह समस्या वर्तमान युग में हो रही औद्योगिक प्रगति एंव शस्त्रो के निर्माण के फलस्वरूप उत्पन्न हुई है।

पर्यावरण प्रदूषण के कई कारण है, जिनमें से एक बढ़ती हुई जनसख्यां है। बढ़ती हुई जनसख्यां की आवश्यकतायो की पूर्ती के लियें मानव ने वनो को तेजी से काट डाला। एक अनुमान के अनुसार वर्ष १९०० में विश्व में कुल ७०० करोड़ हेंक्टेयर वन थे। जो १९७५ में घटकर केवल २४९ करोड़ हेंक्टेयर रह गये तथा यह संख्या अभी भी तेजी से घट रही है। वनो का विनाश मृदा अपरदन का प्रमुख कारण है, तथा वनो के विनाश से वातावरण में कार्बन-डाई आक्साइड की मात्रा में वृद्धि हो रही हैं। इसके अतिरिक्त अत्याधिक जनसख्यां वृद्धि, औद्योगिकरण, बड़े-बड़े कारखानो, सड़को, रेलो, अन्य वाहनो व नगरो के विकास ने पर्यावरणीय तन्त्रो में परिवर्तन ला दिया हैं। इससे भारी वायु प्रदूषण हुआ है, तथा ओजोन मण्ड़ल के लिये खतरा पैदा हो गया है।

विकसित तथा विकासशील देशो के व्दारा उत्पन्न ग्रीन हाउस गैसो के कारण धरती का तापमान तेजी से बढ़ रहा है। धरती के बड़ते तापमान के कारण पक्षी पहले कही जल्दी अण्डे दे रहे है, पौधो पर समय से पहले फूल आने लगे है, और सर्दियो भर सोने वाले भालू के नींद की अवधि भी कम हो गयी है।

पर्यावरण में होने वाले ये परिवर्तन हमें अभी सें दिखायी दे रहे है, जबकि पिछले १०० वर्षो में धरती का तापमान लगभग १ डिग्री सेन्टीग्रेड ही बढ़ा है। यदि

Snow Kids

यह सिलसिला जारी रहा तो इस सदी के अंत तक यानी २१०० में जब यह तापमान ६ डिग्री सेन्टीग्रेड तक बढ़ जायेगा तो क्या होगा? अगर धरती का तापमान इसी तरह बढ़ता रहा तो ध्रुवीय हिमखण्ड अतीत की बात बन जायेगे। अगर हालात ऐसे ही रहे तो हो सकता है कि २०५० की गर्मियो के बाद आर्कटिक में बर्फ ढुढ़ने से भी न मिले। पृथ्वी के कुछ हिस्सो पर जमी रहने वाली बर्फ की चादर हिमखण्डो के रुप में समुद्र में समा रही है। और उसके पिघलने से हर साल थोड़ा थोड़ा चढ़ रहा समुद्र हॉलैड और बाग्लादेश के निचले इलाको को ही नही बल्कि लक्षव्दीप का अच्छा खासा भू-क्षेत्र भी निगलता जा रहा है।

वायु प्रदूषण व तापवृद्धि के अतिरिक्त अत्याधिक जल का प्रदूषित होना व भूमि के प्रदूषित होने से भी मानव जीवन का संकट बढ़ता जा रहा है।

औद्योगिकरण के इस युग में कागज, चीनी, वनस्पति घी, पेट्रोलियम तथा चमड़ा आदि के कारखाने से निकला व्यर्थ व अपशिष्ट पर्दाथ नदियों में गिरा दिया जाता है, जिससे पीने हेतु उपलब्ध स्वच्छ जल प्रदूषित हो रहा है। कानपुर, हरिव्दार, इलाहाबाद, वाराणसी, कोलकता, तथा मुम्बई आदि नगरो के उद्योगो ने नदियों के जल को अधिक प्रदूषित किया है। सयुंक्त राष्ट्र संघ की एक रिर्पोट के अनुसार २०३० तक जलवायु परिवर्तन व औद्योगिकरण के कारण विश्व की लगभग आधी आबादी को जल संकट से जूझना होगा। इन सभी लोगो को मजबूर हो कर वहॉ रहना होगा जहॉ जल संसाधनो पर सबसे अधिक दबाव होगा।

जल तथा वायु प्रदूषण के साथ-साथ मृदा प्रदूषण भी एक नये रुप मे सामने आ रहा है। बढ़ती हुयी आबादी का पेट भरने के लिये तथा अधिक खाद्यान्न उत्पन्न करने के लिये विभिन्न प्रकार के रसायनिक खादो व कीटनाशको का कृषि में प्रयोग करने के कारण इनके जहरीले तत्व अनाज, साग-सब्जियो, फल, दूध आदि मे मिल जाते है। विश्व में प्रतिवर्ष लगभग ५लाख लोग इन्ही जहरीले खाद्यान्नो की वजह से मर जाते है।

पर मनुष्य अपने इन विनाशकारी कार्यो को देखते हुये भी अपने आप को नही रोक पा रहा है। तापमान में हो रही वृद्धि को रोकने के लिये सयुंक्त राष्ट्र

Snow Kids

व्दारा एक समझौता पारित किया गया है, जिसे क्योटो समझौता के नाम से जाना जाता है। इसे ११ दिसम्बर १९९७ में जापान के क्योटो शहर में ग्रहण किया गया, और १६ फरवरी २००५ में अमल में लाया गया। भारत ने भी अगस्त २००२ में इस समझौते का अनुमोदन किया। इस समझौते का उद्देश्य 'वायु मण्डल में ग्रीन हाउस गैसो का घनत्व ऐसे मात्रा तक सीमित रखना है, जिससें मनुष्य जीवन पर कोई प्रभाव न पड़ें।'

इतने बड़ें समझौते को स्वीकार करने के बाद भी विकसित राष्ट्र विकासशील देशो पर ग्रीन हाउस गैसो का उत्सर्जन कम करने का दबाव बना रहे है। उस पर विकासशील देश इसे अपनी उन्नती के मार्ग का बाधक मान रहे है।

इतिहास साक्षी है, कि बड़े पैमाने पर वनो के विनाश से इराक में मेसोपोटामिया की सभ्यता, पीरु में इंका की सभ्यता और सिन्धू घाटी की प्राचीन सभ्यतायो का अन्त हुआ। क्योंकि वनो के विनाश से मृदा अपरदन हुआ, बाढ़ें आयी, नहरें व खेत अनउपजाउ मिट्टी से भर गये, आकाल पड़े, लोग मरे और गाँव व नगर नष्ट हो गये। पर्यावरण प्रदूषण से आज फिर मानव सभ्यता खतरे में है। इस सभ्यता को बचाने के लिये वृक्षारोपण करना सर्वश्रेष्ठ साधन है, तथा इसके साथ-साथ मानव को अपनी बढ़ती हुयी आबादी पर भी रोक लगानी होगी, नही तो पता नही कब हमारी यह प्यारी धरती हम मानवो की गलती से नष्ट हो जायेगी।

Snow Kids